कलकत्ता के आध्यात्मिक विश्वविद्यालय के सेवाधारी श्री रवीन्द्र नाथ दास को झूठे केस में फँसाकर कलकत्ता पुलिस द्वारा बर्बरतापूर्ण व्यवहार का बेबुनियाद और अर्थ रहित प्रकोप

क्या एक मुख्य अभियंता द्वारा अपना संपूर्ण जीवन ईश्वरीय सेवा के लिए समर्पित करना एक गुनाह है? कलकत्ता पुलिस वालों को अपने-आप रवींद्र नाथ दास के पीछे पड़ने की कोई वजह तो है ही नहीं। तो ज़रूर उनके पीछे कोई धनबल वाले का ही हाथ होगा।

पर्दे के पीछे शरारती तत्वों के अत्याचार उस समय बंगाल में भी नहीं रुके। आध्यात्मिक परिवार को समाप्त करने के एक महत्वपूर्ण अभियान में हमारे भाई रवींद्र नाथ दास को एक और षड़यंत्र के तहत घसीटने का अचानक प्रयास किया गया। जुलाई, 2001 के दौरान कलकत्ता की खादिम शूज़ कम्पनी के मालिक (प्रोप्राइटर) उद्योगपति पार्था राय वर्मन जो ब्रह्माकुमारी आश्रम के भी सदस्य थे, उनके अगुआ होने का लाभ उठाते हुए रवींद्र नाथ दास को उनकी अगुआई के झूठे केस में फँसाया गया। यह बात संदिग्ध ही रही कि श्री वर्मन को सचमुच अगुआ किया गया या नहीं? किंतु इस बहाने रवींद्र नाथ दास को गिरफ्तार किया गया।

The Unfounded Fury of the Calcutta Police on the spiritual brother of the Ashram Ravindranath Das .

Is it a crime for a Chief Engineer to surrender himself for life for the cause of spiritual service? Actually there appears for the Calcutta Police no reason at all to implicate Ravindra Bhai on their own accord into the muds of conspiracies. Definitely there is somebody behind; with overflowing monies allocated for.

The harassments resorted to by evil elements behind the curtains did not confine to Bengal only. As part of the plan of conspiracy in course of eradicating the entire Ishwariya Family, they have pulled down Ravindra Nath Das also in to another case

which has no base at all. Taking advantage of a said to be kidnap of industrialist Mr. Partha Roy Burman Proprietor, Khadim Shoe Co., of Calcutta during July 2001, a false allegation of kidnap on Shri Ravindra Nath Das has been instigated. Evidently, Mr. Partha Roy Burman is a member Brahma Kumari Ashram. It remained doubtful whether Shri Burman had really faced kidnap or not. But under this pretext Shri Das was arrested.

रवीन्द्र नाथ दास मर्चेण्ट नेवी में चीफ इंजीनियर थे, जिन्होंने ईश्वरीय सेवा के लिए अपने पद से त्यागपत्र दे दिया था। वे कलकत्ता के आध्यात्मिक विद्यालय सॉल्टलेक कॉलोनी में एक मुख्य सेवाधारी के रूप में ही रहते हैं। बेबुनियाद और झूठे आरोपों के आधार पर कलकत्ता पुलिस ने 200 पुलिस वालों के साथ दिनांक 6.8.01 को मध्यरात्रि के आस-पास कलकत्ता स्थित आध्यात्मिक विद्यालय पर छापा मारा। चूँकि रवीन्द्र नाथ दास कलकत्ते के आध्यात्मिक विद्यालय में मौजूद नहीं थे, कलकत्ता पुलिस ने आध्यात्मिक विद्यालय के 4 निवासियों को गिरफ्तार किया और कुछ दिनों तक कठोर पूछताछ के बाद छोड़ दिया। तत्पश्चात्, उन्होंने कम्पिल और फर्रुखाबाद स्थित आध्यात्मिक विश्वविद्यालय में भी छापा मारा।

Mr. Das was a chief Engineer in merchant Navy who had renounced his job for the sake of Ishwariya Sewa. He remained himself as an ordinary Sewadhari at "AVV" at Saltlake in Calcutta. On the basis of this baseless allegation, the Calcutta Police raided the "AVV" at Saltlake with a huge number of policemen on 6.8.01 at around midnight. As Shri Das was not available there, the Calcutta Police arrested 4 "AVV family" members on service at Saltlake and left them after a few days of hardcore interrogation. Subsequently they raided the "AVV" situated at Kampil & Farrukhabad.

उन पर उक्त उद्योगपति को अगुआ करने और उन्हें छोड़ने से पहले तीन करोड़ रुपये की फिरौती वसूल करने का आरोप लगाया गया। कलकत्ता की पुलिस ने दिनांक 11.08.2001 को रवीन्द्र नाथ दास को गिरफ्तार किया और लगातार तीन महीने तक कलकत्ता की जेल में उनके ऊपर बर्बरतापूर्ण अमानवीय अत्याचार किए गए। रवीन्द्र नाथ दास के जेब में पुलिस वालों को तीन रुपये भी नहीं मिले थे। हिन्दी समाचार पत्र दैनिक जागरण में दिनांक 20.08.01 को यह समाचार प्रकाशित किया कि अमरीकी एजेन्सी और इन्टरपोल ने दाऊद इब्राहीम के अंडरवर्ल्ड गिरोह के उन सदस्यों की पहचान करने में भारतीय पुलिस की सहायता की है, जो कि फिरौती की माँग के साथ उद्योगपति पार्था राय वर्मन जी को अगुआ करने की उक्त घटना के लिए ज़िम्मेदार थे। इस प्रकार रवीन्द्र नाथ दास-जैसे निर्दोष सेवाधारी को उसकी निर्दोषता के सभी प्रमाणों के बावजूद यातनाएँ दी गईं और उन्हें लगभग तीन महीने बाद यानी 16 नवम्बर, 2001 को जमानत पर छोड़ दिया गया था।

He has been charged with kidnapping the abovenamed industrialist and extracting a ransom of 3 crores before releasing him. They could arrest Shri Das on 11-8-2001 and tortured him in an inhuman procedures in Calcutta Jail for a period of three months. In fact the police could not trace at least Rs.3/- from his pocket. Hindi daily 'Dainik Jagran' on 20.8.01 ultimately published that an American agency and Interpol have helped the Indian Police in identifying the members of the Dawood Ibrahim underworld gang which is responsible for the above abduction against a ransom demand. An innocent Sewadhari like Shri Das was thus tortured despite all the proofs of his innocence and the case still continued while he was released on bail only on 16th Nov, 2001.

रवीन्द्र नाथ दास मधुमेह के रोगी हैं और बढ़ती उम्र के साथ अन्य बीमारियाँ से भी पीड़ित रहते हैं और चार वर्षों तक न्यायालयों और पुलिस वालों के सामने बार-2 उनकी उपस्थिति ज़रूरी पड़ने के कारण उनका उत्पीड़न हो रहा था। यह प्रक्रिया लंबी अवधि तक चलती रही और तब पूरे तरीके से थमी, जब स्पेशल कोर्ट ने दिनांक 20-05-2009 को खादिम शूज़ के मालिक के अपहरण के मामले में दुबई के प्रसिद्ध आतंकवादी आफ़ताब अन्सारी को उनके चार अनुचरों के साथ आजीवन कारावास की सज़ा सुनाई और रवीन्द्र नाथ दास को दोषमुक्त कर बाइज्ज़त बरी कर दिया। अब उपरोक्त तथ्यों को जानकर कोई भी समझ सकता है कि षड़यंत्रकारियों के हाथ आध्यात्मिक परिवार को समाप्त करने की कोशिशों में कहाँ तक पहुँच सकते हैं। कहाँ दुबई के आतंकवादी और कहाँ भगवान की स्मृति में, सेवा में अपना जीवन व्यतीत करने वाले ईश्वरीय परिवार के सदस्य ! इसके साथ अखबारों में इस संबंध में छपे हुए न्यूज़ जुड़े हुए हैं |

Ravindra Nath Das is highly diabetic with other ailments and he was put to harassment by the police demanding for his presence very frequently in their as well in the presence of courts.

This type of harassment of Ravindra Bhai lasted long and ultimately the verdict by the Special Court inside Alipur Central Jail has awarded life imprisonment to Aftab Ansari, a Dubai based Don and four of his accomplices on the charge of abduction of the proprietor of Khadim Shoes on 20th May, 2009. And finally, Mr. Ravindra Nath Das was relieved of all the allegations with respects.

Now anybody with proper application of mind can easily and fully understand as up to which level the hands of the conspirators can reach in their attempt to extinguish the entire "AVV family". Can anyone even dream that there could be any resemblance or connection of "AVV family" who spend their life in remembrance of Supreme God and compare with the Don of Dubai !

Some news items published by News Media are annexed along with this. The other episodes to continue.

दिल्ली पुलिस ने गुमनाम शिकायतों को अधिक महत्व नहीं दिया :

एक और घटना में शरारती तत्वों ने कानपुर के कुँवर विजय सिंह द्वारा भ्राता वीरेंद्र देव दीक्षित पर अनैतिक संबंध रखने की कपटपूर्ण शिकायत राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, गृहमंत्री तथा किरण बेदी-जैसे अन्य गणमान्य व्यक्तियों को उकसाने के लिए करवाई। इसके परिणामस्वरूप किरण बेदी द्वारा अशोकविहार, दिल्ली के पुलिस थाने के डी.सी.पी. ने विजयविहार, दिल्ली स्थित आध्यात्मिक विद्यालय की सन 2003 में जाँच आरंभ की। तथ्यों के सत्यापन के बाद पुलिस अधिकारियों को भ्राता वीरेन्द्र देव दीक्षित व आध्यात्मिक विश्वविद्यालय के खिलाफ कोई भी सबूत नहीं मिला व कुँवर विजय सिंह द्वारा की गई शिकायत निराधार व झूठी पाई गई।

In another incident, the miscreants instigated one Kuwar Vijay Singh of Kanpur to make another fraudulent complaint of illicit connections on Spiritual Brother Virendra Deo Dixit to mislead the President, Prime Minister, Home Minister and other VIPs like Mrs. Kiran Bedi. As a result, the D.C.P. of Ashok Vihar, Delhi Police Station, started investigation on 8-7-2003 from Vijaya Vihar, Delhi Ashram under the guidance of Mrs. Kiran Bedi. This exercise also proved the complaint to be false after verifying the facts. And the complaint made by Kuwar Vijay Singh proved false.

एक और छलछिद्र कपटपूर्ण सामूहिक हमला :

भ्राता वीरेंद्र देव दीक्षित और कमला देवी दीक्षित के ऊपर बलात्कार करने और सहयोग देने के आरोपों पर एक तरफ़ कोर्ट्स में सुनवाई चलती रही और दूसरी तरफ़ सीता माता जैसी विदुषी माता को इसी संदर्भ में कैद होने का डर दिखाकर, भय पैदा करने की कोशिश करने वाला एक दल अर्थात् कुछ सर उभरने लगे और उन्हें ईश्वरीय परिवार से अलग करने में कामयाब हुए।

The Foxiness of another group attack on "AVV family" :

The hearing of the baseless allegations of rape and assistance for the same are lingering in the courts against the Spiritual brother Virendra Deo Dixit and Spiritual Sister Kamla Devi Dixit respectively on one hand and on the other hand a group of miscreants, in other words some heads could succeed in infusing panic in the mind of the Spiritual Sister by showing the shadows of arrest and consequent police atrocities; separated her from the Ishwariya Family .

जेल से 1998 के भारतीय स्वतंत्रता दिवस व कृष्ण जन्माष्टमी के दिन अर्थात् 15-08-1998 को छूटे भ्राता वीरेंद्र देव दीक्षित के पीछे, उन्हें मारने के लिए कंस-जैसे आसुरी तत्वों से प्रेरित उनके अकासुर-बकासुर जैसे अनुचर वर्ग पड़े रहे। जिस वजह से भ्राता वीरेंद्र देव दीक्षित को एक तरफ भूमिगत होना ही पड़ा हो और दूसरी तरफ़ भ्राता वीरेंद्र देव दीक्षित की गैरमौजूदगी में कमला देवी दीक्षित को डरा-धमकाकर उन्हें ईश्वरीय परिवार से गायब होने में अर्थात् घूँघट में चले जाने के लिए विवश करने में भी कुछ अन्य विरोधी सफल हो गए। **मुरली महावाक्य ता. 14-10-1972 पृष्ठ-3 के मध्य में आज भी लागू है- "सीता अशोक वाटिका में नहीं, शोक वाटिका में थी। अब भी शोक वाटिका में है ना !"**

कमला देवी दीक्षित और ईश्वरीय परिवार के विरुद्ध जितने वक्त झूठे मुकदमे कोर्ट्स में चलते रहे, उतना ही वक्त गुजरते-2 कन्याओं-माताओं की ईश्वरीय यज्ञ में शामिल होने की भागवत कथा बढ़ती रही। ऐसी परिस्थितियों में कमला देवी दीक्षित तो अंडरग्राउंड हो घूँघट में चली गई।

Soon after Spiritual Brother Virendra Deo Dixit was released on bail on 15th August, 1998, the day of Independence of Bharat which happened simultaneously to be the auspicious day of Krishna Janmastami, the followers like Akasur and Bakasur ordained by the diabolic heads like Kamsa started chasing him and in the circumstances the attempts to harm Spiritual Brother Virendra Deo Dixit made him hide underground. Exploiting the situation, some foxy natured intruders on the other hand could threaten and break off her; spiritual sister Kamla Devi Dixit; differ out from the Ishwariya Family, in other words forced her to hide in veil. The sacrosanct versions of Mruali dated 14-10-72, Page 3 at the middle, stand applicable even today. “Sita was not in Ashok Vatika (Where there is no sorrow), she is in Shok Vatika (Where there is full of sorrow). Even now she is in Shok Vatika. Isn’t’ it!

To the extent the number of fake cases instigated by the satanic rivals to the Truth are on increase to obstruct Kamla Devi Dixit and the spiritual activities of the "AVV family", the story of **Bhagawat, i.e.,** the number of kanyas and Matas joining the sacrifice for Godly Service continued to rise in multiplication. That was the situation when the spiritual sister Kamla Devi Dixit has gone in veil.

अब आध्यात्मिक विद्यालय में ईश्वरीय सेवा के लिए समर्पित होने वाली कन्याओं-माताओं की बढ़ती हुई संख्या को संभाले कौन ? इन सबकी पालना करने की ज़िम्मेवारी अपने कंधों पर उठाने वाली शिव की शक्ति कौन ? अब महाभारत की जननी सत्यवती कौन ?

अब आदि से लेकर अंत तक भागवत की गरिमा रखने वाली और महाभागवत को अंजाम देने वाली, ईर्ष्या-द्वेष से परे रहने वाली अनसूया माता कौन ?

Now who will take the responsibility of looking after the increasing numbered Kanyas and Matas (the sisters and mothers) surrendering themselves for the cause of spiritual service in "AVV" ! Who is that efficient Shakti (Power) of Shiv that can iniate and step ahead to discharge this sensitive responsibility of maintenance of all these ? Who is that Satyavathi (stable on the vow for Truth and Purity), the Mother of Maha Bharat? ! Who is that Virgin Anasuya mata, who is beyond jealousy and spite that can hold the dignities of Bhagavat from the beginning to the end and stand as inspiration and initiation for Mahabhagavat (The great escapade)?

Let us have a look into the foundations of Bhagawat.